International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 25-01-2023, Accepted: 08-02-2023, Published: 27-02-2023
Volume 5, Issue 1, 2023, Page No. 9-10

साकेत महाकाव्य में विरहिणी उर्मिला के प्रेम की अभिव्यंजना

डॉ० अरविन्द कुमार उपाध्याय
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी, केशव प्रसाद मिश्र राजकीय महिला महाविद्यालय, औराई, भदोही, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
'साकेत' महाकाव्य में मैथिलीशरण गुप्त ने उपेक्षित नारी उर्मिला के विरह वेदना का अनूठा चित्र खींचा है। मैथिलीशरण गुप्त को यह प्रेरणा महावीर प्रसाद द्विवेदी से प्राप्त हुयी।उनकी प्रेरणा से समाज में उपेक्षित नारियों को मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी रचनाओं में स्थान दिया। विरह के सन्दर्भ में कहा जाता है कि वह प्रेम के अश्रुमय स्वरुप पर अधिक रीझा है।

"And Love is loveliest when enbalmed in tear's"1

मूल शब्दः प्रेम की अभिव्यंजना, साकेत महाकाव्य में उर्मिला का विरह

प्रत्येक मानव के अंतस्तल में एक विरहिणी छिपी हुई है जिसके कोमल करों में कसाव हुए तारों वाली वीणा है। जब कभी किसी अज्ञातनामा कक्ष से उस पर आघात करता है तो वह व्यक्ति छटपटा उठता है। उसका मन मरोरने लगता हैं तो अनायास ही उसके वीणा के तार झंकृत हो उठते हैं कोई विरला ही अतिशय बड़भागी होगा जो शक्ति को संजोकर साहस बटोरकर इस स्थिति में कुछ कह पाता है। व्यक्ति की इसी आत्मानुभूति में उसका विरह मूर्तिमान हो जाता है। उर्मिला अपने विरह वेदना को किसी के समक्ष प्रस्तुत नहीं करना चाहती। वह अपने प्रियतम की याद में खुद ही तड़पती हुई वियोगिनी चकवा तथा चकवी को सांत्वना देती है और कहती है कि हे चकवा एवं चकवी तुम शोक मत करो यह शोक करने का अवसर नहीं है तुमको तो इस विरह को धैर्य पूर्वक सहने और स्वीकार करने का अवसर है तू शोक मग्न न हो संसार में तू ही अकेली वियोग में नहीं पड़ी है। तुम्हारे साथ मैं भी अपने प्रियतम के कष्ट को झेलती हुई अत्यंत दुखी हूं।

"कोक, शोक मत कर हे तात,
कोकि, कष्ट में हूँ मैं भी तो, सुन तू मेरी।
धीरज धर, अवसर आने दे, सह ले यह उत्पात,
मेरा सुप्रभात वह तेरी सुख–सुहाग की रात!"[2]

मानव का यही अंतराल युग–युग से जीवन कला और काव्य को अपने सौरभ के मकरन्द से आप्लावित करता रहा है। यही विरहिणी कालिदास के हृदय में शकुंतला,भवभूति के हृदय में सीता,जायसी की आत्मा में नागमती,सूर के अन्तस हृदय में राधा, मीरा के प्राणों में अश्रुओं से सिक्त होकर वेदना पुनः वही विरहिणी मैथिलीशरण गुप्त के अन्तस चेतना में उर्मिला बन गयी है। उर्मिला का विरह 'साकेत' महाकाव्य की सबसे प्रमुख घटना है, यही स्यात् रहस्य है। उर्मिला अपने विरह को अपने सखि से कहती है कि हे सखि पतंगा और दीपक दोनों में प्रेम का पालन होता है, प्रेम में पतंगा और दीपक दोनों साथ–साथ जलते है। इससे यह प्रदर्शित होता है कि दोनों ओर प्रेम पलता है।

"दोनों ओर प्रेम पलता है।
सखि, पतंग भी जलता है हा! दीपक भी जलता है!" [3]

'साकेत' महाकाव्य में उर्मिला की विरह वेदना उसके विरह को प्रदर्शित करता है। जीवन में कला,कला में प्रेम और प्रेम में विरह का महत्व स्वयं सिद्ध होने लगता है जैसे ये व्यक्ति के विकास के क्रमिक सोपान है। वेदना की आग में प्रेम की कलुषता विनष्ट हो जाती है और फिर निष्कलुष एवं सात्विक प्रेम अवशिष्ट रह जाता है। यदि कवि के मुख से उर्मिला का नाम नहीं निकलता तो शायद श्रुति,कीर्ति और मांडवी की भांति उर्मिला का नाम की अनंत काल के लिए विलीन हो जाता। 'साकेत' की उर्मिला.... आह! उर्मिला.... जिसके नाम मात्र से हृदय में भावों के विचारों की तरंगे उद्वेलित होने लगती है अथवा जिसके नाम से ही उर को मिला देने की सामीप्य लाभ करने की सहानुभूति प्रकट करने की भावना समय उत्पन्न हो जाती है। वह उर्मिला 'साकेत' की ही उर्मिला नहीं है परंतु सम्पूर्ण साकेत ही उसका है। उर्मिला को प्रिय विरह का दुःख सहना पड़ता है कभी–कभी उसका यौवन मचल पड़ता है और उसका कोमल हृदय अधीर हो जाता है यौवन की उमंगे उसके हृदय को द्रवित करती हैं किंतु वह किसी तरह उन्हें समझा–बुझाकर शांत कर देती है–

"मेरे चपल यौवन–बाल!
अचल अंचल में पड़ा सो, मचलकर मत साल।
बीतने दे रात, होगा सुप्रभात विशाल,
खेलना फिर खेल मन के पहनके मणि–माल।"[4]

'साकेत' से उर्मिला नहीं वरन् उर्मिला से ही 'साकेत' की श्री सुषमा युक्त है। अभी–अभी उर्मिला के हाथ पीले हुए हैं। अपने माता–पिता की गुल–गुली गोद को छोड़कर साकेत में उसका आना हुआ है। एक अपरिचित नवयुवक (लक्ष्मण) के साथ मैत्री के प्रगाढ़ बंधन में बंध जाने को विवश है। वह किसी तरह अपने पतिदेव के हास–परिहास में जनकपुर की मधुर स्मृतियों को भुलाने की चेष्टा कर रही है।अब साकेत के सौंध कलशों से युक्त राजभवन में उसका मन बहलने लगता है। सहसा उसे संवाद मिलता है कि राम और सीता की सेवा के लिए उनके पतिदेव वन–प्रयाण कर रहे हैं। उर्मिला किंकर्तव्य विमूढ़ हो जाती है। वह अपना कर्तव्य निर्धारित नहीं कर पाती ऐसा परिलक्षित होता है जैसे मानों विरह का अपार सागर अपने उत्ताल तरगों को समेट न पा रहा हो। 'साकेत' महाकाव्य में उर्मिला के विरह में अबला हृदय की विवशता,दीनता और सहनशीलता की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। उर्मिला का प्रेम विरह की ज्वाला में तपकर ऐहिक न रहकर आध्यात्मिक रुप धारण कर लेता है। वह अपने मानस मन्दिर में प्रिय की प्रतिमा स्थापित करते हुये अपने प्रियतम के वियोग में जलती हुयी स्वयं आरती बन जाती है।

"मानस–मन्दिर में सती, पति की प्रतिमा थाप,
जलती–सी उस विरह में, बनी आरती आप।
आँखों में प्रिय–मूर्ति थी, भूले थे सब भोग,
हुआ योग से भी अधिक उसका विषम–वियोग!"[5]

उर्मिला अपने कातर मन को बार–बार समझाती है किंतु स्वयं कभी अत्यधिक अधीर हो उठती है तो उसका विरह मूर्तिमान हो जाता है। लक्ष्मण के प्रवास का प्रसंग और उर्मिला की मूंक विदा का चित्र पाषाण– प्रतिमा को भी रुला देता है और क्यों न रुलाए यशोधरा की गोदी में एक लाल था,शकुंतला की गोदी भरने वाली थी,राधा के प्रियतम केवल पांच–छः मील दूर थे और सीता तो अपने पति के साथ में ही थी। श्रुति,कीर्ति तथा मांडवी अपने प्रिय से वह तो निःसंम्बल थी न । उसके लिए तो 'पिया बिनु नागिन काली रात थी' पलकों की छांव में पलने वाली उर्मिला आज किसी से इतना भी नहीं कह पाती। वृक्ष से च्युत लता की भांति दीन–हीन जैसी थी और तो और किंतु एक नवविवाहिता वधू के जीवन में उसके प्राणोंपम पति के अभाव की व्यथा शायद सर्वाधिक हृदय विदारक घटना है। लक्ष्मण वियोगजयी होकर चले जाते हैं। उर्मिला उन्हीं के प्रेम में निमग्न हो जाती है। उसके इठलाते और मदमाते यौवन पर तुषार पात हो जाता है। वह अल्पव्यय में वीत रागनी बन जाती है किंतु उसे अपने कर्तव्यों का ध्यान है।अपने प्रियतम की मधुर स्मृतियों को हृदय में संजोये बड़ी ही तन्मयता के साथ अपने दिन काट रही है नींद जैसे उसकी आंखों से भाग गई है। अतः स्वप्न में प्रिय के दर्शन करने की आशा निराशा में परिणत हो जाती है। उर्मिला ने जिसे अपनी रंगीन पुतलियों और लता जैसी लचीली बाहुओं में बांध रखा था,दैवयोग से उसके बिछुड़ जाने पर अब केवल इतना ही चाहती है। उर्मिला का हृदय कई बार तीव्र वेग के साथ उद्वेलित होने लगता है वह अपने प्रियतम को इस अभिलाषा के साथ उनके पास पहुंचना चाहती है। विरहिणी उर्मिला झुरमुट की ओट से अपने प्रियतम को देखकर संतोष लाभ पाना चाहती है वह कहती है।

"बीच–बीच में उन्हें देख लूं मैं झुरमुट की ओट,
जब वे निकल जाय तब लेटू उसी धूल में लोट।
रहे रत वे निज साधन में
यही आता है इस मन में।"[6]

उर्मिला और लक्ष्मण का प्रणय युग्म अद्वितीय था। उनमें सुंदरता थी, यौवन था, पास में साधन थे सुख था अतः उनका संयुक्त जीवन रस–विलास अपूर्व था आज सभी कल्पनाएं हैं उसका मुख अतीत की वस्तु बन चुका है। उर्मिला को अपने सुखी जीवन की बार–बार याद आती है और वह अधीर हो जाती है। कभी पवन की गति चंचल हो रही थी। आकाश में घटाएं उमड़ रही थी और वर्षा की प्रथम फुहारे पड़ने लग गई थी उसमें केतकी की गंध चारों ओर गमक रही थी। झिल्ली की झंकार से एक अद्भुत संगीत की सृष्टि हो रही थी। उर्मिला इस प्रकृति सुषमा को बार–बार निहारती आलिन्द में खड़ी थी।

"मैं निज अलिन्द में खड़ी थी सखि, एक रात,
रिमझिम बूँदें पड़ती थीं, घटा छाई थी,
गमक रहा था केतकी का गंध चारों ओर,
झिल्ली–झनकार यही मेरे मन भाई थी।
करने लगी मैं अनुकरण स्वनूपुरों से,
चंचला थी चमकी, घनाली घहराई थी,
चौंक देखा मैंने, चुप कोने में खड़े थे प्रिय,
माई! मुख–लज्जा उसी छाती में छिपाई थी!"[7]

लक्ष्मण का शांत–भाव से अपनी प्रेयसी की क्रीड़ा का देखना,प्रियतमा का चौक जाना,लज्जित हो जाना और लाज से छाती में छिपा लेना कितना मधुर दृश्य उपस्थित करता होगा किंतु हाय! आज तो यह अब उर्मिला के लिए व्यथा के उपादान हैं। इसीलिए जब इसकी सखियां भोजन की थाल लाती हैं तो उसे खाने से अनिच्छा हो जाती है। वह उसे लौटा देती है। उर्मिला नवयुवती है उसने अपने जीवन के शारीरिक एवं मानसिक सुखों का उपयोग किया है। जब कभी उसका यौवन मचलने लगता है तो वह उसे बड़े ही प्यार से दुलारती हुई वह कहती है कि– हे मेरे चंचल बाल यौवन तू अपनी इसी स्थिति में पड़ा रह मुझे परेशान ना कर..... कभी कामदेव अपने कोमल किन्तु तीक्ष्ण बाणों से उर्मिला पर आघात करता है तो वह कितनी कातर वाणी में उनसे अनुनय विनय करती है–

"मुझे फूल मत मारो,
मैं अबला बाला वियोगिनी, कुछ तो दया विचारो।
होकर मधु के मीत मदन, पटु, तुम कटु गरल न गारो,
मुझे विकलता, तुम्हें विफलता, ठहरो, श्रम परिहारो।
नही भोगनी यह मैं कोई, जो तुम जाल पसारो,
बल हो तो सिन्दूर–बिन्दु यह––यह हरनेत्र निहारो!
रूप–दर्प कंदर्प, तुम्हें तो मेरे पति पर वारो,
लो, यह मेरी चरण–धूलि उस रति के सिर पर धारो!"8

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि 'साकेत' महाकाव्य में विरहिणी उर्मिला के प्रेम की अभिव्यंजना मैथिलीशरण गुप्त के महाकाव्य 'साकेत' में परिलक्षित होती है। उर्मिला का विरह विश्व के समस्त प्रेमी हृदयों का विरह है।उर्मिला समस्त नारी जगत की व्यथा का भार लिए संसार के थके मांदे प्रेम–पथिकों के लिए नई प्रेरणा, नया संदेश और नई आशा की ज्योति है। उर्मिला का जीवन नारी–जगत का प्राण है।इसलिए वह एक ऐसा प्रकाश स्तंभ है जो जीवन मार्ग पर भूले–भटके क्षत–विक्षत, श्रान्त परिश्रान्त प्रेमियों को अनंत काल तक गति दिशा प्रदान करती रहेगी। अब तो हे उर्मिला तू भावों विचारों की नहीं अपितु वेदना और कसक की टीस उत्पन्न कर रही हो। तुम्हारे ही आंसुओं से साकेत के पन्ने–पन्ने आज तक सिक्त है। तुम करुणा की 'ऐसी नीर भरी बदरी हो', जिससे आज की किशोरियों के प्रेम परितप्त हृदय को राशि–राशि शीतलता प्राप्त होती है। तुम वेदना की साकार प्रतिमा हो अतःमेरी भी संवेदना तुम्हारे साथ है।

सन्दर्भ सूची

1. साकेत एक अध्ययन – डॉ०नगेन्द्र पेज संख्या–61
2. साकेत– मैथिलीशरण गुप्त (नवम् सर्ग)– पेज संख्या –300
3. साकेत– मैथिलीशरण गुप्त (नवम् सर्ग)– पेज संख्या –280
4. साकेत–मैथिलीशरण गुप्त (नवम् सर्ग)–पेज संख्या–325
5. साकेत–मैथिलीशरण गुप्त (नवम् सर्ग)–पेज संख्या–267
6. साकेत–मैथिलीशरण गुप्त (नवम् सर्ग)–पेज संख्या–323
7. साकेत–मैथिलीशरण गुप्त पेज संख्या नवम् सर्ग)–पेज संख्या –295
8. साकेत–मैथिलीशरण गुप्त (नवम् सर्ग)–पेज संख्या – 313
9. साकेत का टीका–राजकिशोर अग्रवाल,कैलाश प्रिंटिंग प्रेस,वागमुजफ्फर खां,आगरा।
10. साकेत विचार और विश्लेषण–डॉ०वचनदेव कुमार एवं डॉ०रमेश प्रसाद सिन्हा लोकभारतीय प्रकाशन 15–ए,महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद–1
11. साकेत के नवम सर्ग का काव्य–वैभव– कन्हैयालाल सहल
12. श्री निवास गुप्त द्वारा साहित्य मुद्रण, चिरगांव(झांसी) में मुद्रित
13. साकेत दर्शन –त्रिलोचन पाण्डेय